आधुनिक काल (भारतेंदु युग) के कथन

- "जो नवजागरण 1857 के स्वाधीनता संग्राम से आरम्भ हुआ, वह भारतेन्दु युग में और व्यापक बना, उसकी साम्राज्यवाद विरोधी, सामन्तवाद विरोधी प्रवृत्तियाँ द्विवेदी युग में और पुष्ट हुई फिर निराला के साहित्य में कलात्मक स्तर पर तथा उनकी विचारधारा में ये प्रवृत्तियाँ क्रान्तिकारी रूप में व्यक्त हुई।" ~डॉ0 रामविलास शर्मा

- "रामविलास शर्मा हिन्दी नव-जागरण और उसके साहित्य की विशेषताओं का सशक्त, स्वतन्त्र और प्रामाणिक विवेचन करने वाले पहले व्यक्ति है।" ~डॉ0 मैनेजर पाण्डेय
- "पुनर्जागरण दो जातीय संस्कृतियों की टकराहट से उत्पन्न रचनात्मक ऊर्जा है।" ~डॉ0 रामस्वरूप चतुर्वेदी

Gyanshodh Competition Classes

भारतेन्दु हरिश्चन्द रचित पंक्तियाँ

- श्री राधा माधव युगल चरण रस का अपने को मस्त बना। पी प्याला भर भरकर कुछ इस मैं का भी देख मजा ॥
- रोवहु सब मिलि, आवहु भारत भाई। हा! हा! भारत दुर्दशा न देखी जाई ॥
- रहै क्यों एक म्यान असि दोय। जिन नैनन में हरि-रस छायो तेहि क्यों भावै कोय ॥
- सखा प्यारे कृष्ण के गुलाम राधा रानी के।

- सहसन बरसन सो सुन्यो जो सपने नहिंकान, सो जय आरज शब्द ।
- फरकि उठीं सबकी भुजा, खरकि उठी तरवार । क्यों आपुहिं ऊँचे भए आर्य मोछ के बार ॥
- हाय! वहै भारत-भुव भारी। सब ही विधि सों भई दुखारी ॥ हाय चित्तौर! निलज तू भारी। अजहुँ खरो भारतहि मँझारी ॥
- निज भाषा उन्नत अहै, सब उन्नति कै मूल । बिन निज भाषा ज्ञान कै मिटै न हिय कै सूल ॥
- कहाँ करुणानिधि केशव सोए ? जागत नाहिं अनेक जतन करि भारतवासी रोए ॥
- मेरे तो साधन एक ही है, जग नन्द लला वृषभानु दुलारी ॥
- पिय प्यारे तिहारे निहारे बिना अँखियाँ दुखियाँ नहिं मानती हैं।
- सिसुताई अजौ न गई तन ते, तऊ जोबन जोति बहोरे लगी।
- आजु लो न मिले तो कहा हम तो तुमरे सब भाँति कहावें । प्यारे जू है जग की यह रीति बिदा की समें सब कण्ठ लगावें ॥
- सभा में दोस्तों बंदर की आमाद है,गधे और फूलों के अफसर की आमाद आमाद है।
- भीतर-भीतर सब रस चूसे, हँस हँस के तन मन धन मूखै। जाहिर बातन में अति तेज क्यों सखि सज्जन नहिं अंगरेज ॥
- 'रसा' महवे फसाहत दोस्त क्या दुश्मन भी हैं सारे । जमाने में तेरे तर्जे सुखन की यादगारी है।
- हैं हैं उर्दू हाय हाय! कहाँ सिधारी हाय! हाय!
- मुँह जब लागै, तब नहि छूटे, जाति मान धन सब कुछ लूटे । पागल करि मोहिं करे खराब, क्या सखि सज्जन नहीं सराब ॥
- बहुत हमने फैलाये धर्म, बढ़ाया छुआछूत का कर्म

Gyansindhu Competition Classes

- अंधाधुंध मच्यौ सब देसा। मानहुँ राजा रहत विदेसा।
- अंग्रेज राज सुख साज सजै सब भारी। पै धन बिदेस चलि जात इहै अति ख्वारी ।
- ढूंढ़ फिरा मैं इस दुनिया में पश्चिम से ले पूरब तक
  कहीं न पायी मेरे दिलदार प्रेम की तेरे झलक।
- मसजिद मंदिर गिरजों में देखा मतवालों का जो दौर
  अपने अपने रंग में रंगा दिखाया सब का तौर।
  सिवा झूठी बातों व बनावट के न नजर आया कुछ और
- जागो अब तो खल बल दलन रक्षहु अपनो आर्य मग
- डूबत भारत नाथ बेगि जागो अब जागो
- रचि बहुविधि के वाक्य पुरातन माहिं घुसाए
  सैव साक्त वैष्णव अनेक मत प्रगट चलाए ।
  विधवा ब्याह निषेध कियो विभिचार प्रचार्यो
  रोकि विलायत गमन कूप मंडुक मनायो।
- सांझ सवेरे पंछी सब क्या कहते है कुछ तेरा है।
  हम सब इक दिन उड़ जायेंगे यह दिन चार बसेरा है।।'
- मरेहू पै आखे ये खुली ही रह जायेंगी।

Gyansindhu Competition Classes

बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमघन' की पंक्तियाँ

- बगियान बसन्त बसेरो कियो, बसिए तेहि त्यागि तपाइए ना।
  दिन काम कुतूहल के जो बने, तिन बीच वियोग बुलाइए ना ॥
  'घन प्रेम' बढ़ाय के प्रेम, अहो ! बिथा बारि वृथा वरसाइए ना ॥
  चित चैत की चाँदनी चाह भरी, चरचा चलिये की चलाइए ना ॥

- निरधन दिन दिन होत है, भारत भुव सब भाँति ।
  ताहि बचाइ न कोउ सकत निज भुज बुधि बल काँति ॥
- अचरज होत तुमहुँ सम गोरे बाजत कारे। तासों कारे 'करि' शब्दहु पर हैं वारे ॥
- भयो भूमि भारत में महा भयंकर भारत | भए बीरबल सकल सुभट एकहि सँग गारत ॥
- आजु ला रही अनेक भाँति धीर धारि कै। पैन भाव मोहि बैठनो सु मौन मारि कै ॥
- धन्यभूमि भारत सब रतननि की उपजावनि ।

प्रतापनारायण मिश्र की पंक्तियां

Gyansindhu Competition Classes

- अभी देखिए क्या दशा देश की हो। बदलता है रंग आसमां कैसे कैसे!
- पढ़ि कमाय कीन्हों कहा, हरे देश कलेस ।
  जैसे कंता घर रहे, तैसे रहे विदेश |
- चहहु साँचहु निज कल्यान, तौ सब मिलि भारत संतान । जपो निरन्तर एक जबान, हिन्दी हिन्दू हिन्दुस्तान ।
- तबहि लख्यौ जहँ रह्यो एक दिन कंचन बरसत ।
  तहं चौथाई जन रूखी रोटिहुँ को तरसत ।
- जग जानै इंगलिश हमैं वाणी वस्त्रहि जोय ।
  मिटै बदन कर श्याम रंग जन्म सुफल तब होय ॥
- नौन तेल लकरी घासहु पर टिक्स लगे जहं ।
  चना चिरौंजी मोल मिलैं जहं दीन प्रजा कहं ॥

- कौन करे जो नहिं कसकत सुनि विपति बाल बिधवन की ।
- विधवा विलपैं नित धेनु कटें कोउ लागत हाय गोहार नहीं ॥
- 'चहहु जु सांचहु निज कल्यान, तौ सब मिलि भारत संतान।
  जपो निरंतर एक जवान, हिंदी हिंदू हिंदुस्तान।।'
- "जग जानें इंगलिश हमें वाणी वस्त्रहि जोय।
  मिटै बदन कर श्याम रंग जन्म सुफल तब होय।।'
- 'हम आरत भारतवासिन पै अब दीनदयाल दया करिए'
- 'तबहिं लख्यो जहं रह्यो एक दिन कंचन बरसत । तह चौथाई जन
  रूखी रोटिहुं को तरसत ।।
- नौन तेल लकरी घासहु पर टिक्स लगे जहं ।
  चना चिरौंजी मोल मिलैं जहं दीन प्रजा कहं ।।'
- "अभी देखिए क्या दशा देश की हो, बदलता है रंग आसमां कैसे-
  कैसे!"

Gyansindhu Competition Classes

ठाकुर जगमोहन सिंह की पंक्तियाँ

- पहार अपार कैलास से कोटिन ऊँची शिखा लगि अम्बर चूम।
  निहारत दीठि भ्रमै पगिया गिरि जात उतंगता ऊपर झूम ॥
- कुलकानि तजी गुरु लोगन में बसिकै सब बैन कुबैन सहा ।
  सब छोड़ि तुम्हें हम पायो अहो तुम छोड़ि हमै कहो पायो कहा ॥
- अब यों उर आवत है सजनी, मिलि जाउं गरे लगि कै छतियाँ ।
  मन की करि भांति अनेकन औ मिलि की जियरी रस की बतियाँ
  ॥

हम हारि अरी करि उपाय, लिखी बहु नेह भरी पतियां ।
जगमोहन मोहनी मूरति के बिना कैसे कटे दुःख की रतियाँ ॥

अन्य फुटकर पंक्तियाँ~

- पूरी अमी की कटोरिया सी चिरंजीवी रही विक्टोरिया रानी' - अम्बिकादत्त व्यास
- हमारो उत्तम भारत देस' -पंक्ति किसकी है? -राधाचरण गोस्वामी

Gyansindhu Competition Classes